Psychology MJC+MIC -9 Semester- 5

What is Guidance ?

निर्देशन क्या है?

एक परिचय

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक

POSTER MAKER
Poster Maker

उत्तर—प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन-पथ पर अनिवार्य रूप में अनेक कठिनाइयों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा उनका समाधान करना पड़ता है। वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी अधिकांश समस्याओं को स्वयं सुलझाता है परन्तु कभी-कभी परिस्थितियों व दशाओं के अत्यधिक कठिन और दबावपूर्ण होने के कारण वह अपनी समस्याओं के घेरे से स्वत: बाहर नहीं निकल पाता है ऐसी अवस्था में उसे उपर्युक्त समस्याओं के घेरे से निकलने अर्थात् समस्याओं को सुलझाने हेतु दूसरों की मदद की आवश्यकता पड़ती है, दूसरों के द्वारा की गयी यही सहायता निर्देशन कहलाती है। इस प्रकार सभी प्रकार की सुनियोजित सहायता जो व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाने और परिवेश के साथ सामंजस्य बैठाने में तथा उसके जीवन को सफल व सुखमय बनाने में सहायक सिद्ध होती है, निर्देशन (Guidance) कहलाती है।

निर्देशन का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Guidance)

निर्देशन का तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से हैं जिसमें एक व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा सहायता प्रदान की जाती है जिससे वह अपने निर्णय ले सके, निष्कर्ष निकाल सके तथा अपने जीवन-मूल्यों को प्राप्त कर सके। निर्देशन द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, जन्मजात एवं अर्जित योग्यताओं, कमियों, रुचियों तथा मानसिक संज्ञान आदि को समझकर अपनी समस्याओं को स्वत: सुलझाने की स्थिति में आता है, ताकि वह अपने शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत जीवन में सफलता, सुख व सन्तुष्टि प्राप्त करने के साथ अपने सामाजिक जीवन को उपयोगी बना सके।

निर्देशन की परिभाषाएँ (Definitions of Guidance)—निर्देशन के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने इसकी अनेक परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख अग्रलिखित है—

जी. ई. स्मिथ (G. E. Smith) के अनुसार, "निर्देशन विभिन्न क्षेत्रों में सन्तोषजनक समायोजन के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सहायक विभिन्न सेवाओं का समूह है, ताकि इसके लिए आवश्यक व्याख्याएँ, योजनाएँ तथा उपयुक्त चयन किया जा सके।"

स्किनर (Skinner) के अनुसार, "निर्देशन वह प्रक्रिया है जो नवयुवकों को अपने प्रति, दूसरों के प्रति तथा परिस्थितियों के प्रति समायोजन में सहायता करती है।"

एमरीस्टूप्स (Emerystoops) के अनुसार, "निर्देशन सहायता प्रदान करने की एक ऐसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्तिगत तथा सामाजिक दृष्टि से हितकारी क्षमताओं का विकास अधिकतम रूप से व्यक्ति में करती है।"

मैनुअल ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशन गाइडेंस (Mannual of Educational and Vocational Guidance) के अनुसार, "निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को शिक्षा, व्यवसाय, मनोरंजन एवं समाज-सेवा सम्बन्धी कार्यों को चुनने, उन्हें तैयार करने एनं प्रवेश करने तथा उन्नति करने में सहायता प्रदान करती है।"

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार, "निर्देशन का लक्ष्य प्रदान करना नहीं है और न ही यह अपने विचारों को दूसरों पर थोपने की प्रक्रिया है। यह उन निर्णयों का निश्चयीकरण भी नहीं है जिन्हें व्यक्ति अपने सन्दर्भ में लेता है। यह दूसरों का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लेता है, बल्कि निर्देशन वह सहायता है जो एक कुशल परामर्शदाता द्वारा किसी भी आयु के व्यक्ति को अपना जीवन निर्देशित करने, अपना दृष्टिकोण विकसित करने, स्वयं निर्णय लेने तथा उत्तरदायित्व सँभालने के लिए दी जाती है।"

यूनाइटेड ऑफिस ऑफ एजुकेशन, अमेरिका (United Office of Education, America) के अनुसार, "निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति का परिचय विभिन्न उपायों से कराती है जिनमें विशेष प्रशिक्षणों को सम्मिलित किया जाता है, जिनके माध्यम से व्यक्ति को प्राकृतिक शक्तियों का बोध कराया जाता है जिससे वह अधिकाधिक अपना और समाज का लाभ कर सके।"

ट्रेक्सलर (Traxler) के अनुसार, "निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यताओं एवं रुचियों को समझने, उन्हें यथासम्भव विकसित करने, उन्हें जीवन-लक्ष्यों से संयुक्त करने तथा अन्ततः अपनी सामाजिक व्यवस्था के वांछनीय सदस्य की दृष्टि से एक पूर्ण एवं परिपक्व आत्म-निर्देशन की स्थिति तक पहुँचने में सहायक होता है।"

कोठारी आयोग (Kothari Commission) के अनुसार, "निर्देशन का क्षेत्र तथा कार्य अधिक व्यापक है। समंजन करना तथा विकास करना दोनों ही निर्देशन के उद्देश्य हैं। निर्देशन व्यक्तित्व के सभी पहलुओं के विकास में सहायक होता है। इसका सम्बन्ध सभी व्यक्तियों या छात्रों से होता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य समय-समय पर निर्णय और समंजन करने में व्यक्ति की सहायता करना है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि निर्देशन एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को सहायता प्रदान करने की एक ऐसी संगठित विशेष प्रक्रिया है, जिसका एक ढाँचा होता है, एक प्रणाली होती है। इसके द्वारा व्यक्ति को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपने व्यक्तित्व, योग्यताओं, अन्तःशक्ति एवं अभिरुचियों आदि का ज्ञान प्राप्त कर सके, उनका अधिकतम विकास कर सके और उनकी सहायता से अपनी समस्याओं के सम्बन्ध में स्वयं निर्णय लेकर उन्हें स्वतः सुलझा सके तथा जीवन की प्रत्येक स्थिति में खुद को बेहतर तरीके से समायोजित कर सके।